اپریل ۲۰۱۴ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفران مآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I.No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No.SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/- Per copy-Rs. 20/-

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

APRIL 2014



صدر دروازہ امام باڑا غفران مآبؒ، چوک، لکھنؤ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल 2014

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 10 — अंक 10

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per Copy 20/- Annual 200/-

सम्पादन समिति

- डॉ० अमानत हुसैन नक़वी
- वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- मौलाना महदी रज़ा, घोसी, मऊ
- मौलाना फ़ैज़ान जाफ़र अली
- सै० नादिर हुसैन आबिदी, लखनऊ
- इमरान आग़ा, लखनऊ
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- मोहम्मद आरिफ़ बस्तवी
- मिर्ज़ा मो० समद अब्बास
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- रेहान आलम, लखनऊ
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- **ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई**
- **इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश**
- **कैफ़ तक़ी नक़वी, ब्यूरोचीफ़ देहली**

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

folk l ph

अप्रैल 2014ई०

जमादिउल अव्वल व जमादिउस्सानी 1435हि०

foyk;r

jgcjs eqvT+te vk;rqYykg mT+ek lS;n vyh [kkesubZ

जो नया विचार और सूझ खुदा ने पैग़म्बर[स०] के द्वारा प्रस्तुत किया उसमें एक नये जीवन का वचन है जो एक संयुक्त समाज व समुदाय के मस्तिष्क में उसकी पहचान तथा उसके क्रिया कलापों को निरोपित करके प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसे समाज जो ठोस तथा अभेद्य सीमा बनाये हुए हों, वहां विपरीत विचार तथा क्रिया कलापों को सरलता से पनपने की छूट नहीं मिल सकती। इसी वजह से यदि निर्भरता का विरोध सम्बन्ध हुआ तो साधारण सम्बन्धों का बन्धन महत्वहीन हो जाएगा। कुर्आन के शब्दों में अनुयायियों का विचार दर्शन तथा क्रिया कलाप के बिन्दु पर सेना की सजी सजाई टुकड़ी की तरह होना ''विलायत'' कहलाता है।

आगे जब मिली जुली इकाई जो इस्लामी सोसाइटी के किनारे का पत्थर हों और इस्लामी समाज का प्राथमिक सिद्वान्त, पहला उसूल है। वह एक शक्तिशाली तथा व्यवस्थित इस्लामी समाज बनाता है, आवश्यकता है कि हम विलायत के सिद्वान्त पर विचार करें, उसकी एकता तथा आपसी सद्भावना को नज़र में रखते हुए और दुश्मनों को उस समाज में घुसपैठ न मिल पाने का ख़्याल रखते हुए।

dqjvku esa bl fopkj fcUnq ij cgqr lh felkysa gSa mueas ls dqN ;g gSa--------

........ऐ ईमान लाने बालों, तुम मेरे शत्रुओं को और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम उनसे मुहब्बत से पेश आते हो, हालांकि जो हक़ (सत्य। तुम्हारे पास आ चुका है वह उसके क़तई मुन्किर (इन्कार करने वाले) हो चुके हैं। (वह पैग़म्बर[स०]) को और तुमको इसी बिना पर निकालते हैं कि तुम अल्लाह, अपने परवरदिगार पर ईमान रखते हो अगर तुम मेरी राह में जिहाद (धर्म युद्ध) करने के लिए और मेरी खुशनूदी (प्रसन्नता) प्राप्त करने के लिए अपने घरों से निकले हो, ऐसा न करो कि तुम उन्हें चुपके–चुपके दोस्ती के पैग़ाम देते रहो हालांकि जो कुछ तुम दिखाते हो या तुम जिसका इज़हार करते हो उसका मुझे ज्ञान है और जो तुममें से ऐसा करेगा वह राह–ए–रास्त से (सत्यमार्ग) से क़तई भटका हुआ है। अगर वह तुमको पकड़ पायें तो तुम्हारे शत्रु हो जायें और कष्ट पहुंचाने के लिए अपने हाथ बढ़ाएं और अपशब्द कहें और इच्छा यह करें कि काश तुम इन्कार करने वाले हो जाओ। न तुम्हारा परिवार व सम्बन्ध तुमको लाभ पहुंचाएगा न तुम्हारे बाल–बच्चे) क़यामत के दिन वह तुम्हारे बीच जुदाई करवा देगा, और जो कुछ भी अ़मल (कर्म) तुम करते हो अल्लाह उसका देखने वाला है। तुम्हारे लिए इब्राहीम तथा उन लोगों की बातें जो उनके साथ थे अच्छा नमूना (उदाहरण) मौजूद है जिस समय कि उन्होंने अपनी क़ौम से यह कहा कि हम तुमसे और उन चीज़ों से जिनकी तुम खुदा के अ़लावा परस्तिश (पूजा अर्चना) करते हो यक़ीनन बेजार है। हम तुमसे अलग हो चुके हैं तुम जब तक कि खुदा–ए–यकता (एकमात्र खुदा) पर ईमान लाओ।

bLykeh lekt ds vkilh fj'rs

महान समाज की स्थापना के पश्चात वह मिली जुली इकाई जो इस्लाम के आदर्शलोक की उद्गम तथा संसार मे सच्ची पैरवी हैं ऐसे समाज में ''विलायत'' का सिद्धान्त उसके भीतरी अथवा शहरी और विदेशी मुआ़मलों व नीतियों तक फैला हुआ है।

शहरी (नागरिक) मुआ़मलों या नीतियों में राष्ट्र के सभी एकीकृत वर्ग की यकसां ज़िम्मेदारी के साथ सभी शक्तियां एक लक्ष्य के लिए सावधानी पूर्वक एक मार्ग पर कार्य करती हैं, और उसके अनुशासनहीन होने तथा बिखरने से सतर्कतापूर्वक बचती हैं जो उस शक्ति के किसी भाग के प्रभावहीन

हो जाने का कारण बनें।

विदेशी मुआमेलों या नीतियों में भी वह ऐसे ही सम्बन्ध बनाती है या दोस्ती क़ायम करती है जो स्वाधीनता के लिए घातक न हो और इस्लामी संसार में जगह रखता हो।

यह पूर्णतया स्पष्ट है कि ''विलायत'' के जिन–जिन तथ्यों पर ध्यान देना ज़रूरी है उनमें दो मूल तत्व हैं। शहरी (नागरिक) एकता तथा सद्‌भवना, अप्रभावित व स्वतन्त्र विदेश नीति (साथ ही साथ केंद्रीय तथा सर्वोच्च शक्ति) यह सच है कि केन्द्रीय तथा सर्वोच्च शक्ति व रचनात्मकता इस्लामी शासक में गडमड होती है, यकजाई होती है। यह भी आवश्यक होता है कि प्रत्येक मुसलमान अथवा मुस्लिम समाज का प्रत्येक व्यक्ति तथा उसके शासक (इमाम) के बीच एक गहरा तथा मज़बूत सम्बन्ध हो। यह ''विलायत''का दूसरा तत्व है कि उसकी विलायत नुमायां हो और वह इस्लामी संसार का नेतृत्व करे।

uhps fn, x, dqjku dsmnkgj.k esamijksDr rRo fn, gq gSa

..........ऐ ईमान लाने वालों, यहूद व नसारा (ईसाइयों) को दोस्त न बनाओ यह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और जो तुममें से उनको दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से हो जाएगा। बेशक अल्लाह ज़ालिमों (अत्याचारियों) की रहनुमाई (मार्गदर्शन) नहीं फ़रमाता, फिर उन लोगों को जिनके दिलों में रोग है, तुम देखोगे कि उनकी दोस्ती, वे बहुत करते हैं और कहते हैं, कि हम डरते हैं कि हम किसी मुसीबत के फेर में न आ जायं। बस क़रीब है कि खुदा विजय या कोई और बात अपनी तरफ़ से ज़ाहिर करे और यह मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) जो कुछ अपने दिलों में छिपाये हुए हों नादिम (लज्जित) हों। उस समय ईमान लाने वाले कहेंगे क्या यह उनके आमाल (कर्म) बेकार हो गये और वह नुक़सान उठाने वालों में हो गये।

...........ऐ ईमान वालों जो तुम में से अपने दीन से फिर जाएगा तो खुदा का नुक़सान नहीं खुदा अनक़रीब (जल्दी ही) ऐसे लोगों को लाएगा जिनको वह दोस्त रखता है और उसको वह दोस्त रखते हैं। मोमिनों के लिए वह रहमदिल (दयालु) है और इंकार करने वालों के लिए सख़्त हैं। खुदा की राह में जिहाद करते हैं, और किसी मलामत करने वाले (आलोचक) की मलामत (आलोचना) से नहीं डरते। यह खुदा का फ़ज़्ल (कृपा) है जिसको चाहे अ़ता फ़र्माए और खुदा–ए–तआ़ला वाक़िफ़कार (व्यापक ज्ञान का धनी) है हाकिम तुम्हारा अल्लाह है और उसका रसूल और वह लोग हैं जो ईमान लाए हैं। नमाज़ पढ़ते हैं और हालत–ए–रूकूअ़ में ज़कात देते हैं।

..........ऐ ईमान वालों अल्लाह से ऐसा डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, और हरगिज़ न मरो लेकिन उस हालत में कि तुम इस्लाम पर हो अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और फूट न डालो''

foyk;r dk LoxZ

बस वही समाज विलायत से लाभ उठा सकता हैं जो ''वली'' को यक़ीन के साथ जान–पहचान लेता है। वह ऐसा व्यक्ति होता है जो ज़िन्दगी की सभी सरगर्मियों का हाकिम व प्रेरणादायक होता है और विलायत का फ़ाएदा उसी व्यक्ति को हो सकता है, जिसे ''वली'' की सही शिनाख़्त हो और जो ''वली'' से अपने को जोड़े रहने के लिए निरन्तर क्रियाशील व सरगर्म रहे। ऐसे ''वली'' से जो खुदा का प्रतिनिधि होने को दर्शा सके, जहां तक ''वली'' के खुदा के नायब होने का और खुदा की दी हुई शक्तियों को दर्शाने का सवाल है वह उन सभी सम्भावनाओं और प्रतिभाओं से काम लेता है जो इंसान के स्वभाव में अपना मूल्य और महिमा बढ़ाने के लिए और लाभ उठाने के लिए निहित हैं, साथ ही साथ यह भी वह अपने किसी ज्ञान या शक्ति का प्रयोग मानवता के विरूद्ध नहीं करेगा और न कोई क्षति पहुंचाने वाला कार्य ही करेगा वह न्याय व सुरक्षा की स्थापना समाज में करेगा जो उसी प्रकार मानव जीवन और समाज के लिए आवश्यक है जिस प्रकार उपजाऊ मिट्टी, पानी तथा अच्छी जलवायु पौधों के विकास के लिए आवश्यक होती है। वह सभी प्रकार की क्रूरता (अनेकेश्वरवाद, अपने अथवा अन्य के हित में अन्याय करने को) रोकेगा। ईश्वर के आदेशानुसार धर्म की अगुवायी उसके निर्देशों के अधीन करेगा। मानव के ज्ञान और दर्शन को विस्तृत और उसके लिए किए गए प्रयासों के शुभारम्भ नेतृत्व करेगा।

वह सिद्धान्तों का दायित्व महसूस करेगा। वह खुदा की उपासना प्रार्थना (नमाज़) स्थापित करेगा उसे खुदा का सान्निध्य प्राप्त होगा। ज़कात का

बटवारा न्यायपूर्वक समुचित ढंग से करेगा। अच्छे कामों (मारूफ़) को प्रोत्साहित करेगा और अनुचित कार्य (मुन्कर) को समाप्त करेगा। संक्षेप में वह मनुष्य को अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता देगा। यदि कुर्आन की निम्नलिखित आयत के विषय में विचार किया जाय तो वह हमें ''विलायत'' के स्वर्ग के क्षितिज की ओर इंगित करती है। यह अकाट्य सत्य है और ज़ोर देकर कहा जा सकता है कि धार्मिक नियंत्रण का और कोई क्षेत्र इतना प्रभावशाली व महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि ''विलायत''।

............बनी इसराईल में जो इन्कार करने वालों में थे। उन पर दाऊद के बेटे और मरियम के बेटे ईसा की ज़बान से लानत की गई, यह लानत उन पर पड़ी तो बस इस वजह से कि इन लोगों ने नाफ़रमानी की और फिर हर मुआमला में हद से बढ़ जाते थे और किसी बुरे काम को जिसको इन लोगों ने किया। बाज़ न आए थे। बल्कि नसीहत के बाद भी अड़े रहते थे, जो काम यह लोग करते थे क्या ही बुरा था। ऐ पैग़म्बर[स०]! तुम यहूदियों में बहुतेरों को देखोगे कि इन्कार करने वालों से दोस्ती रखते हैं। जो सामान पहले से इन लोगों ने खुद अपने लिए दुरूस्त किया है कितना बुरा है। जिसका नतीजा यह है कि दुनिया में भी खुदा इन पर ग़ज़बनाक और क्रोधित हुआ और परलोक में भी हमेशा प्रकोप में रहेंगे। अगर यह लोग खुदा व पैग़म्बर[स०] पर और जो कुछ उन पर अवतरित किया गया है, ईमान रखते हैं, तो हरगिज़ दोस्त न बनाते, मगर उनमें से बहुतेरे बदचलन हैं।

.............ऐ ईमानदारों! जिन लोगों को (यहूद व नसारा) तुमसे पहले किताब (तौरैत व बाइबिल) दी जा चुकी है इनमें से जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना रखा है उनको और इन्कार करने वाले को अपना सरपरस्त न बनाओ अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो, खुदा ही से डरते रहो और उनकी शरारत यहां तक पहुंची कि जब तुम अज़ान देकर नमाज़ के लिए लोगों को बुलाते हो तो, यह लोग नमाज़ को हंसी खेल बनाते हैं। यह इस वजह से कि लोग बिल्कुल बेअक़्ल हैं और कुछ नहीं समझते (ऐ रसूल) यह तो अहल–ए–किताब से कहो आख़िर तुम हममें सिवा इसके और क्या ऐब लगा सकते हो कि हम खुदा पर और जो किताब हमारे पास भेजी गयी है और जो हमसे पहले भेजी गयी है, पर ईमान लाए हैं और यह कि तुममें से अक्सर दुश्चरित्र हैं।

foyk;r dsfo"k; ea½1½

विलायत के सिद्धान्त की कुर्आन में बड़े विस्तार के साथ चर्चा की गयी है। उस पर कई नज़रिये से विचार किया जा सकता है जो सभी समय–समय पर इस्लाम को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि कोई निम्नलिखित आयतों पर ध्यानपूर्वक विचार करेगा तो उसे इन नज़रियों में से कुछ का दर्शन हो सकता है।............

1. मुस्लिम समाज की ''वली'' वह शक्ति है जो उक्त समाज की मानसिक तथा रचनात्मक क्रियाओं में अगुवाई करती है। यह खुदा है या उसके द्वारा नाम लेकर या इशारे से नामज़द किया गया व्यक्ति।

..........ऐ ईमानदारों, तुम्हारे मालिक और सरपरस्त तो बस यही खुदा और रसूल और वह ईमान वाले ही हैं जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और ''रूकुअ'' की हालत में ज़कात देते हैं।

..........ऐ ईमानदारों, खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि, लोगों की अमानतें, उनके हवाले कर दो और जब–जब लोगों के झगड़ों का फैसला करने लगो तो न्याय से फैसला करो। खुदा तुमको इसका क्या ही अच्छा निर्देश करता है, इसमें तो शंका नहीं कि खुदा सबकी सुनता है और सब कुछ देखता है। ऐ ईमानदारो! खुदा की इताअ़त (आज्ञापालन) करो और पैग़म्बर की तथा जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी (ऊलिल अम्र) हैं उनकी आज्ञा मानों और किसी बात में झगड़ा न करो। बस अगर तुम खुदा और रोज़–ए–आख़िरत में ईमान रखते हो तो इस विषय में खुदा व रसूल की तरफ़ आ जाओ, वही तुम्हारे लिए उचित व फ़लदायक है, परिणाम बहुत अच्छा है।

..........जिसने रसूल की इताअत (आज्ञापालन) की उसने खुदा की इताअत की। यदि किसी ने इन्कार किया तो तुम कुछ ख़्याल न करो क्योंकि हमने तुमको पासबान मुक़र्रर करके तो भेजा नहीं है।

2. खुदा की विलायत और उसका ईमान वालों द्वारा माना जाना, स्वीकार करना, मुस्लिम संसार में ऐसी मानसिक बुनियाद है जो एक स्वाभाविक रूप में देखी जा सकती है।

..........क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं की

जो यह ख़याली पुलाव पकाते हैं कि जो किताब आप पर उतारी गयी और जो आप से पहले उतारी गयी थी सब पर ईमान लाए हैं मगर चाहतें यह हैं कि सरकशो को अपना हाकिम बनाएं। हालांकि उन्हें हुक्म यह है कि उन (सरकशों) की बात न माने और शैतान तो चाहता ही है कि उन्हें बहका कर दूर ले जाए।

...........हालांकि यह नहीं समझते कि जो रात को और दिन को ज़मीन पर रहता सहता है। सब काम उसी का है और वही सब कुछ जानता है। ऐ रसूल! तुम कह दो कि खुदा को, जो सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करन वाला है छोड़कर दूसरे को अपना संरक्षक न बनाएं। वही सबको रोज़ी देता है। और उसे कोई रोज़ी नहीं देता, ऐ रसूल, आप कह दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सबसे पहले इस्लाम लाने वाला मैं हूं और यह भी कि, सावधान! जानबूझकर इन्कार करने वालों में न होना।

foyk;r dsfo"k; esa¼2½

खुदा की विलायत के या उसके प्रतिनिध के अतिरिक्त और कोई विलायत शैतान की होगी। शैतान की विलायत में मनुष्य की रचना व क्रियात्मक शक्तियों पर शैतान का क़ाबू होता है। अतः मनुष्य उस शक्ति को अपनी कामुकता तथा दुर्भावना की पूर्ति के रास्ते में लगाने लगता है जहां तक शैतान का सम्बन्ध है वह अपने लाभ के सिवा किसी वस्तु की आवश्यकता को नहीं समझता और चूंकि मनुष्य की आवश्यकताओं और उसकी प्राकृतिक सम्भावनाओं के बारे में उसे कोई ज्ञान नहीं होता इसलिए जब वह मानव समाज का नेतृत्व हाथ में ले लेता है तो वहीं से मनुष्य की बहुमूल्य शक्तियों का विनाश और उनकी क्षति का प्रारम्भ होता है जो समाज शैतान की विलायत के नियन्त्रण में होता है उसमें सूचना के न होने का परिणाम यह होता है कि लोग ज्ञान के प्रकाश और मानव समाज और ईश्वर के जीवनदायी नियमों से वंचित हो जाते हैं और वे अज्ञानता, तुच्छ भावनाओं, स्वार्थ और प्रतिकूलता के अन्धकार में सीमित होकर रह जाते हैं। पवित्र क़ुर्आन कहता हैः

..........और जब तुम क़ुर्आन पढ़ने लगो तो शैतान के भ्रमों से खुदा की पनाह मांग लिया करो। ....इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग ईमानदार हैं और अपने–अपने परवरदिगार (पालनहार) पर भरोसा रखते हैं उन पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता, उसका प्रभाव चलता है तो बस उन्हीं लोगों पर जो उसकी दोस्त बनाते हैं और जो लोग उसको खुदा का शरीक बनाते हैं।

..........और जो व्यक्ति सत् मार्ग के ज़ाहिर होने के बाद रसूल से सरकशी करें, और ईमान वालों के तरीक़े के सिवा किसी और राह पर चलें तो जिधर वह फिर गया है हम भी उधर ही फेर देंगे और आख़िर में उसे जहन्नम (नरक) में झोंक देंगे और वह तो बहुत ही बुरा ठिकाना है। खुदा बेशक इसको तो नहीं बख़्शता (क्षमा करता) कि उसको (खुदा को) किसी और का शरीक बनाया जाए। इसके सिवा जो गुनाह (पाप) हों वह जिसको चाहे बख़्श दे, मआ़ज़ल्लाह (ऐसा नहीं)। किसी को खुदा का शरीक बनाया वह जो बस भटक कर बहुत दूर जा पड़ा। वह पथ–भ्रष्ट, खुदा को छोड़कर बस औरतों की ही आराधना करते हैं यानी बुतों की जो उनके ख़्याल में औरतें हैं। वास्तव में सरकश शैतान की उपासना करते हैं। जिस पर खुदा ने लानत की है और जिसने प्रारम्भ में कहा था कि खुदा वन्दा! मैं तेरे बन्दों में से कुछ मुख्य लोगों को अपनी तरफ़ ज़रूर ले लुंगा और फिर उन्हें पथ–भ्रष्ट करूंगा। उन्हें बड़ी–बड़ी आशाएं दिलाउंगा। तथा यक़ीनन उन्हें सिखा दूंगा कि फिर वह बुतों के वास्ते जानवरों के कान की ज़रूर चीर फाड़ करेंगे अलबत्ता उनसे कह दुंगा कि वह मेरी शिक्षा के अनुरूप खुदा की बनाई हुई छवि को बदल डालेंगे। यह याद रहे कि जिसने खुदा को छोड़कर शैतान को अपना संरक्षक बनाया उसने प्रत्यक्ष रूप में सख़्त घाटा उठाया है। शैतान उनसे अच्छे–अच्छे बादे भी करता है बड़ी बड़ी आशाएं भी दिलाता है शैतान उनसे जो कुछ भी बातें करता है वह भी धोखा है।

...........खुदा उन लोगों का संरक्षक है जो ईमान ला चुके हैं। उन्हें गुमराही के अंधकार से निकाल के ज्ञान के प्रकाश में लाता है। परन्तु जिन लोगों ने इन्कार किया उनका संरक्षक शैतान है कि उनको ईमान के प्रकाश से निकाल कर इन्कार के अन्धकार में डाल देता है। यही लोग तो जहन्नमी (नारकीय) हैं और यही लोग उसमें हमेशा रहेंगे।

foyk;r dslEcU/k esa¼gtjr½

जो समाज आसुरी व शैतानी विलायत के अन्तर्गत होता है उसमें सच्चे अनुयायी (मोमिन) विभिन्न

प्रकाश से असुर या राक्षस की शक्तियों पर निर्भर हो जाते हैं और उनके अनदेखे जाल में फंस जाते हैं। उनकी स्वाधीनता छिन जाती है और वे अनजाने रूप में उस अन्त तक पहुंच जाते हैं जहां पहुंचना ऐसी व्यवस्था का भाग्य है। ऐसी व्यवस्था सच्चे अनुयायी (मोमिन) को इस्लाम के रास्ते में अपनी शक्ति का प्रयोग करने से रोकती है।

यह अनिवार्य वास्तविकता हिजरत के गोचर रास्ते की ओर संकेत करती है शैतान के बन्धनों से बचना और इस्लाम के स्वाधीन वातावरण तक पहुंचना जहां प्रत्येक वस्तु मनुष्य को ईश्वरीय उद्देश्य की पथ–प्रदर्शक है और जहां समाज की स्वाभावक व्यवस्था मनुष्य के उत्थान तथा मानसिक और भौतिक विकास की ओर ले जाती है जहां अच्छाई हर चीज़ पर छा जाती है और बुराई का कोई चिन्ह मात्र भी दिखाई नहीं देता अर्थात् इस्लामी समाज।

अतः विलायत सिद्धान्त के अनुसार हिजरत सच्चे अनुयायी के लिए आवयश्क कर्तव्य है, उसका काम यह है कि वह शैतानी वातावरण से इस्लामी समाज की ओर स्थानान्तरित हों और ईश्वरीय विलायत के वातावरण में प्रवेश कर जाएं।

कुर्आन में हिजरत से सम्बन्धित जो आयतें हैं उनके बारे में विचार करने से इस विषय के बहुत से बिन्दु प्रकट हो जाते हैं।

..........उन लोगों की इच्छा तो यह है कि जिस तरह उन्होंने इन्कार किया है, तुम भी इन्कार करने वाले हो जाओ, ताकि तुम उनके बराबर हो जाओ। बस जब तक कि तुम खुदा की राह में हिजरत न करो। तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ फिर अगर वह इससे भी मुंह मोड़ें तो उन्हें गिरफ़्तार करो और जहां पाओ उनको क़त्ल कर दो। उनमें से किसी को अपना दोस्त न बनाओ।

..........जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया और हिजरत की तथा अपने जान व माल से खुदा की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने हिजरत करने वालों को जगह दी तथा हर तरह उनकी सहायता की यही लोग एक–दूसरे के दोस्त व रक्षक हैं। जिन लोगों ने ईमान को स्वीकार किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से सम्बन्ध नहीं। यहां तक कि वह हिजरत करें और हां यदि दीनी मुआमले में तुमसे सहायता के इच्छुक हों तो तुम पर उनकी सहायता करना आवश्यक है। लेकिन उन लोगों के मुक़ाबिल नहीं जिनमें और तुममे परस्पर सुल्ह का क़रार व पैमान है जो कुछ तुम करते हो खुदा सब कुछ देखता है। जिन लोगों ने इन्कार किया है वह भी आपस में एक दूसरे के संरक्षक हैं। अगर तुम इस तरह मदद न करोगे तो ज़मीन पर फ़साद पैदा हो जाएगा। जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया है और हिजरत तथा जिहाद किया जिन लोगों ने ऐसे समय में हिजरत करने वालों को जगह दी और उनकी देखभाल की, यही लोग सच्चे ईमानदार हैं और इन्हीं के लिए मुक्ति और मान–सम्मान की रोज़ी है।

.........अवश्य जिन लोगों की रूह फ़रिश्तों ने उस वक़्त क़ब्ज़ कि जब वह दारूलहर्ब में पड़े अपनी आत्मा पर अत्याचार कर रहे थे और देवदूत रूह निकालने के बाद आश्चर्य से कहते कि तुम किस हालत–ए–ग़फ़लत (भ्रम की स्थिति) में थे तो वह क्षमा मांगने के शब्दों में कहते हैं कि हम तो ज़मीन पर बेसहारा थे, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि खुदा की ऐसी लंबी चौड़ी ज़मीन में गुन्जाइश न थी कि तुम हिजरत करके चले जाते। बस ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। मगर जो पुरूष और स्त्रियां और बच्चे इस क़दर बेबस हैं कि न तो दारूलहर्ब से निकलने के लिए उपाय कर सकते हैं और न ही उनकी मुक्ति की राह दिखाई देती है तो आशा है कि अल्लाह ऐसे लोगों को क्षमा कर दे। खुदा तो बहुत बड़ा क्षमा करने वाला और मुक्ति देने वाला है। जो व्यक्ति खुदा की राह में हिजरत करेगा वह ज़मीन पर निष्कंट चैन से रहने–सहने के बहुत से विस्तृत स्थान पाएगा। जो व्यक्ति अपने घर से जिलावतन होएंगे। खुदा और उसके रसूल की तरफ़ निकल खड़ा हुआ फिर यदि उसे इच्छित लक्ष्य तक पहुंचने से पहले मौत आ जाए तो भी खुदा पर उसका पुण्य लाज़िम (अनिवार्य) हो गया जबकि खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है ही।

(आक़ा अली रिज़ा अनोशेरवानी के अंग्रेज़ी अनुवाद "The General Pattern of Islamic Thought in th Qur'an" से भाई याक़ूब हैदर ज़ैदी द्वारा अनुदित)

II II II

जि़न्दगी का सिस्टम

y$kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
l Eiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

½fdLr %21½

शरीयत ने रोज़े का जो हुक्म दिया है उसमें इन्सान अगर बिला वजह की लज़्ज़तों के पूरा करने का ख़्याल न करें और सही तौर पर अ़मल करे तो एक महीने में हर इन्सान के ख़र्च में से एक वक़्त के खाने के ख़र्च का एक बड़ा हिस्सा बच सकता है और अगर सारे समाज का ये रोज़ों का बचाया गया वह हिस्सा जमा हो तो बड़े–बड़े ज़रूरी मज़हबी और समाजी काम इससे पूरे हो सकते हैं।

आइम्मा मासूम इमामों अ0 ने इनमें से अक्सर फ़ायदों पर अपने सूझबूझ भरे बयानें और मोजिज़ा भरे न्योर बोल से रौशनी डाली है, नीचे ये हदीसें दी जाती है।

1. हश्शाम बिन अल्हिक्म की रवायत है कि उन्हों ने इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से पूछा कि रोज़े के हुक्म की क्या वजह है। आप अ0 ने कहा रोज़ा वाजिब ठहराया गया, ताकि एक वक़्त ऐसा भी हो जिसमें मालदार और फ़क़ीर बराबर नज़र आये। बात ये है कि मालदार आदमी भला काहे को कभी भूख की तकलीफ़ का अहसास करता कि फ़क़ीर पर रहम करें क्यों कि मालदार जब किसी चीज़ को चाहता है तो वह चीज़ उसे आसानी से मिल जाती है। खुदाने चाहा कि अपनी बन्दों में बराबरी बनाये और मालदार को भूख की तकलीफ़ का मज़ा चखा देता कि वह कमज़ोर पर नरमदिल हो और भूखेपर तरस खाये।''

यह वह रूहानी फ़ायदा है जो ख़ुदा के पैदा किये होने के लेहाज़ से मिलता है।

2. ज़रारह की रवायत इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से '' हर चीज़ के लिए पाक करने का एक ज़रिया होता है और जिस्म के (अन्दर की गन्दगियां जैसे बलग़म वग़ैरह) पाक करने का ज़रिया रोज़ा है।

ये वह पहला माददी फायदा (Material/ Physical Benifit) है जो निजी ज़िन्दगी से जुड़ा मैंने अर्ज़ किया था।

3. मुहम्मद बिन लेस्नान की रिवायत इमाम रज़ा अ0 से जो मसले लिख कर उन्होने पूछे थे उसके जवाब में लिखा है ''

रोज़े की वजह ये है इन्सान भूख प्यास की तकलीफ़ समझे कि उसके आप से झुकाव और समर्पण पैदा हो यानी इन्सान में कूअत और ताक़त और सत्तर का जो घमण्ड है वह यह देख कर, कि एक फ़ाक़े में उसकी क्या हालत हो गयी, ज़रा कम हो और वह इनाम और सवाब का हक़ बने और उस में तकलीफ़ सहने का घमण्ड का सलाहियत पैदा हो और इससे आख़ेरत की सख़्ती समझे यानी वह समझे कि जब दुनिया की ज़रा सी तकलीफ़ में मेरा ये हालत है तो आख़ेरत की सख़्ती मैं कैसे झेल सकता हूँ। इसके अलावा उसमें मन की ख़्वाहिशों को मात देना भी छिपा है। उस में दुनिया में नसीहत हासिल होती है और आख़ेरत के लिए मार्ग दर्शन ताकि उसको दुनिया और आख़ेरत दोनों की ग़रीबी और भूख कैसे होती है इस का अन्दाज़ हो। दुनिया की भूख और ग़रीबी का अहसास होगा तो ग़रीबों के साथ हमदर्दी पैदा होगी और आख़ेरत की ग़रीबी के अहसास से अपने लिए आख़ेरत में काम आने

वाली चीज़ें इकट्ठा करने की चिन्ता होगी।

इस हदीस में कुछ उन पहलूओं की तरफ़ इशारा आ गया है जिनका बयान पहले हो चुका है।

4. फ़ज़्ल बिन शाज़ान की रवायत में जो इमाम रज़ा अ0 से है उन सारी बातों के अलावा ये भी है कि

''उनके लिए नसीहत की वजह होती है और एक तरह कि तपस्या यानी तैयारी की प्रैक्टिकस है उन फ़र्ज़ों, कर्त्तव्यों के पूरा करने के लिए जिसका पूरा करना उसके ज़िम्मे वाजिब है।''

आत्मा के विकास का वह अहम पहलू है जिसे विस्तार के साथ पहले बयान किया गया है।

मालूम हुआ कि रोज़े में रूहानी फ़ायदे (Spritual Gains) हैं और माद्दी फ़ायदे (Physical Gains) भी और ये ख़्याल करना बिल्कुल ग़लत है कि इस्लाम ने रूहानीयत की धुन में माद्दीयत (Material) वालों की बिल्कुल अनदेखी कर दी है।

jkst s+ij jkst k-¼dp esavQ+rkj dsfcuk½

अगर इस्लाम ने माद्दी पहलू को रोज़े के हिस्से में नज़र अन्दाज़ किया होता तो 'सौमे विसाल' की इजाज़त दे देता। सौमे विसाल क्या है? यानि दो दिन या उससे ज़्यादा का रोज़ा, इस तरह कि बीच में अफ़तार न किया जाए। ज़ाहिर है कि इसमें अपने पर कंट्रोल बहुत ज़्यादा होगा और रूहानी ज़िन्दगी का मेयार यही हो तो इसमें ऊँचाई पैदा होगी। मगर इस्लाम ने इस तरह के रोज़े की इजाज़त नहीं दी। उसका रोज़ा सुबह से मग़्रिब तक की मुद्दत (अवधि/Period) से आगे नहीं बढ़ सकता।

l Qj+ esajkst sdksNkM+usdk gDe

यह भी रोज़े के हुक्म के साथ माद्दी पहलू (Material aspect) का लेहाज़ ही है कि शरीयत ने सफ़र की हालत में जिस तरह नमाज़ की चार रकअ़त के बजाए दो रकअ़त ही रखी है उसी तरह रोज़े के छोड़ने का हुक्म दिया है। ज़ाहिर है कि इन्सान को जितना जी का लगाव, इत्मीनान, चैन और आराम घर पर होता है वह सफ़र में हरगिज़ नहीं होता। इस से शरीयत ने इन्सान से रोज़े की ज़िम्मेदारी को इस हालत में हटा दिया।

कुछ लोग ये ख़्याल करते हैं कि ये क़स्र नमाज़ और रोज़ा छोड़ने का हुक्म उस ज़माने में सही था जब सफ़र बहुत ही मुश्किल और सख़्त था। ऊँट का सफ़र और मुश्किल रास्ते और सख़्ती, उस ज़माने में इस रियायत की ज़रूरत थी, लेकिन अब जबकि रेल और बस के सफ़र ने रास्तों को आसान कर दिया है और अक्सर ए0सी0 या फ़र्स्ट क्लास तक में सफ़र की नौबत आती है तो इस हालत में इस रियायत की कोई ज़रूरत नहीं है मगर ये ख़्याल सही नहीं है। हक़ीक़त ये है कि ये लोग उस पुराने ज़माने के सफ़र की ज़िन्दगी का अपनी रोज़मर्रा की शहरी ज़िन्दगी के लेहाज़ से बराबरी करते है तो वह बहुत मुश्किल नज़र आता है और उस लेहाज़ से अपना सफ़र कुछ भी नहीं महसूस होता। लेकिन उस ज़माने के लोगों के सफ़र की ज़िन्दगी का उनके रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से बराबरी (Compare) करें और अपने सफ़र को अपने घर की ज़िन्दगी के लेहाज़ से देखें तो मालूम होगा कि उनका सफ़र उनके रहन–सहन के लेहाज़ से उतना ही कठिन था जितना आज का सफ़र है। इसलिए अगर उनका रहन–सहन उनकी आदतों और बर्दाश्त की कूवत के लेहाज़ से उनका सफ़र इस रियायत का मुस्तहक़ है तो हमारी आराम से भरी ठहराव की ज़िन्दगी के लेहाज़ से हमारे सफ़र को उसका मुस्तहक़ होना चाहिए। इसके अलावा ये देखिए कि जिस तरह हमारे ज़माने के लेहाज़ से हमारे सफ़र का मेयार (Standard) अलग–अलग है और सेकेण्ड और फ़र्स्ट एसी, (या जहाज़ में एकानॉमी, एक्ज़ीक्यूट्यू क्लास) के दर्ज हैं, इसी तरह पिछले ज़माने के सफ़र के तरीक़े के लेहाज़ से उस ज़माने में भी

इसी तरह अलग–अलग दर्जे ज़रूर थे। पैसे वाले अमीर लोग ज़रूरी ही इस तरह सफ़र करते थे जो उस ज़माने की ज़िन्दगी के लेहाज़ से पूरी तरह आराम भरा समझा जाता होगा। अगर सफ़र में क़स्र का हुक्म किसी ग़ैर मामूली/असामान्य परेशानी के लेहाज़ से होता तो इसमें ये फ़र्क़ होना चाहिए था कि ग़रीब लोग जो ज़्यादा ही परेशानी के साथ सफ़र करें वह इस रियायत से फ़ायदा उठा सकते हैं लेकिन अमीर लोग जो चैन और आराम से सफ़र करते हैं वह इस रियायत के मुस्तहक़ नहीं हैं। जब ऐसा नहीं किया गया और आम तौर पर ये हुक्म लागू कर दिया। या तो इससे साबित होता है कि यह हुक्म किसी असामान्य/ग़ैर मामूली परेशानी के लेहाज़ से नहीं दिया गया है, बल्कि ये हुक्म उस निजी नागवारी और बेचैन के लेहाज़ से लागू किया गया है जो 'सफ़र' की वजह से कुदरती (Natural) तौर पर इन्सान में पैदा होती है। अब इससे बढ़ कर इन्सान की माद्दी (Material) ज़िन्दगी का लेहाज़ और क्या होगा?

dledkt hft Ukxhij jkst sdk vlj

ये एतराज़ किया जाता है कि एक भूखा–प्यासा न तो दिन भर काम कर सकता है और न उसको काम करना चाहिए, क्यों कि अगर उसके जिस्म (Body) ने मेहनत की तो उसका असर उसकी सेहत (Health) पर ज़रूर पड़ेगा। लेकिन अगर एक ग़रीब मज़दूर काम नहीं करता है तो इसके नतीजे में उसे माली मुश्किलों और इक़्तेसादी (Economic) बदहाली का सामना करना पड़ेगा। इस सवाल के करते वक़्त इंसान उस को ज़िन्दगी का ध्यान करता है जो ज़िन्दगी मज़दूर बिताते है जिसमें उनको धूप में चलना फिरना और खड़ा रहना पड़ता है, इन्जन में कोएला देना या बोझ उठाना पड़ता है। इन सबका ध्यान वह अपनी चैन और आराम चाहने वाली तबियत के लेहाज़ से करता है और इस वजह से वह ख़्याल करता है कि वह बड़ा सख़्त काम है और उसके साथ रोज़ा हरगिज़ नहीं हो सकता लेकिन ग़ौर करने पर मालूम होता है कि जो भी जिस पेशे (Profession) को अपना लेता है और उसको अपने जीवन का हिस्सा बना लेता है तो उसकी सहने की ताक़त उसी लेहाज़ से बढ़ जाती है। हम जिस वक़्त मई जून की गर्मी में मज़दूरों को देखते है कि वह धूप में खड़े दीवार उठा रहे हैं या मज़दूर ईंटे ढो–ढो कर ऊपर पहुँचा रहे हैं तो हम यक़ीन के साथ कह सकते हैं कि हम अगर एक बार इससे आधा बोझ भी उतनी दूर ले जाए या थोड़ी ही देर इस धूप में खड़े रहें तो हमारी प्यास बहुत भड़क जाए और हम फ़ारन बेचैन होकर ठंडे पानी की तरफ़ लपक जाएँ, मगर क्या ये लोग इस धूप में खड़े होकर और इस बोझ को उठाकर इसी तरह बार–बार पानी पीते हैं, जिस तरह हमें इस मौक़े पर ज़रूरत का एहसास होता है, हरगिज़ नहीं। वह पानी उसी तरह दिन में कुछ बार पीते हैं जिस तरह गर्मी के मौसम में हम पीते हैं, इसलिए यह नहीं समझना चाहिए कि वह रोज़ा किसी सूरत से रख ही नहीं सकते जिस तरह हमें इत्तेफाक से अगर ऐसी ग़ैर मामूली कड़ी मेहनत पड़ जाए तो हम रोज़ा न रख सकेगें और अगर उन्होंने रोज़ा रखा और मान लीजिए रोज़े से सेहत पर असर पड़ने लगा तो उन पर से इस मोक़े पर रोज़े की ज़िम्मेदारी हट हो जाएगी। इस सूरत में इक़्तेसादी ;म्बवदवउपबद्ध बदहाली और माली मुश्किलें कैसे पैदा हो सकती हैं? ये तो तब पैदा होती हैं जब उन्हें मजबूर किया जाता है कि अगर सेहत पर बुरा असर पड़ने लगे तब भी वह रोज़ा रखे जाएँ मगर अपना काम छोड़ दें, लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं।

jkst s dh eqnr (Period/vof/k½

रोज़े के वाजिब होने को कुरान मजीद ने एक ख़ास मुद्दत के साथ सीमित किया है

''शहरू र–म–ज़ानल्लज़ी अन्ज़ला फ़ीहिल कुरआ–न हुदल्लिन्नासि व बय्य–नात मिनल हुदा वल फ़र्क़ान ''

हम ख़ास तौर से इसी महीने को निश्चित करने के बारे में तो अक़्ली हैसियत से कुछ नहीं समझ सकते और इसको समझने की ज़रूरत भी नहीं क्यों कि बहरहाल यह महीना न होता तो कोई और महीना होता लेकिन सवाल यह है कि किसी एक महीने को निश्चित करने की ज़रूरत क्या है? इसके लिए हमें ग़ौर करना चाहिए कि रोज़े के वाजिब होने के लिए कितनी सूरतें ख़्याल में आती हैं, पहली सूरत यह है कि इसके लिए न कोई ख़ास मुद्दत होती है और न कोई गिनती निश्चित होती बल्कि यह कहा जाता कि जिसको जितनी सकत हो और जितना दिल चाहे उतने रोज़े रख लें।

दूसरी सूरत यह है कि गिनती निश्चित होती मगर कब कब रोज़ा रखने की बात न होती यानी छूट दे दी जाती कि साल भर में इतने रोज़े पूरे हो जाएँ चाहे एक साथ चाहे अलग–अलग।

तीसरी सूरत यह है कि गिनती भी निश्चित होती और एक ख़ास अंदाज़ भी निश्चित होता कि एक महीना लगातार रोज़ा होना चाहिए, मगर महीना निश्चित न होता बल्कि छूट होता कि जब चाहो रख लो। अब देखना यह है कि यह सूरतें कहाँ तक बयान के मक़सद के मुताबिक़ हैं।

याद रखना चाहिए कि क़ानून का ख़ास मक़सद डिसिप्लिन (discipline) और इसके साथ फिर यह कि फर्ज़/कर्त्तव्य का एहसास बना रहे। मज़हब की खास बात यह है कि वह आदमी की निजी ज़िन्दगी में पहुँचता है और बन्धन लगाता है। यही वह चीज़ है जिसमें राज या सरकारी क़ानून मज़हब के आगे हथ्यार डाल देता है और मात खा जाता है। सरकारी क़ानून केवल सामूहिक और बाहरी ज़िन्दगी पर बन्धन लगाता है और उसके दबाव में शरीर आता हूं लेकिन मज़हब का क़ानून दिल, दिमाग़, मन और अन्तरात्मा पर कन्ट्रोल करके आदमी की निजी ज़िन्दगी और एकान्त के कामों में भी बान्ध लेता है इस बन्धान का एहसास बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी है कि मज़हब की तरफ़ से तबियत पर कुछ दबाव एक फ़र्ज़ के तौर पर लागू हो और इसके साथ उसमें एकरंगी और एकरूपता हो ताकि समाज के सब लोग इसके ज़रिए से एक डोरे में जुड़े दिखें। इस्लाम ने अपनी शिक्षाओं के हर हिस्से में फ़र्ज़ के इस एहसास को बाक़ी रखने और एकरंगी व एकरूपता पैदा करने का ख़ास एहतेमाम किया है।

नमाज़ के बयान में क़िब्ला और वक़्त वग़ैरह के टॉपिक में इस पर काफ़ी कुछ बयान किया जा चुका है। ऊपर बयान की गई तीनों सूरतें इस ख़ास मक़सद के लेहाज़ से बिल्कुल कामयाब नहीं हैं। पहली सूरत कि रोज़ों की कोई गिनती निश्चित न होती, यह सब हैसियतों से कुबूल करने के क़ाबिल नहीं है, पहली बात तो यह कि इसमें फ़र्ज़ का एहसास जिसके लिए तबियत पर एक दबाव पड़ने की ज़रूरत है, वह इसमें पाया नहीं जाता।

जब मामला हमारी सकत और हमारी चाह से जुड़ गया तो ज़ाहिर है कि हममें से हर कम से कम अपने ज़िम्में वाजिब करेगा, ऐसे में कोइ नेज़ाम (System) भी नहीं होता और लोगों की एकरंगी भी नहीं रहती क्योंकि कोई साल में दस दिन रख रहा है और कोई पाँच दिन और कोई एक दिन। यह तो कोई क़ानून से बन्धना नहीं हुआ बल्कि एक खुशी का कारोबार हुआ।

इससे वह रूहानी (Spititual) और माद्दी (Material) फ़ाएदे हरगिज़ पूरे नहीं हो सकते जो रोज़े का असली मक़सद है।

●●●

¼Jkh————————½

मुख्य समाचार

bjZkuh ifr fuf/ke.My dhgl u ul : Yy kg l sey kdkr

हिज़्बुल्लाहे लेब्नान के जनरल सिक्रेटरी सै0 हसन नसरूल्लाह ने ईरान की क़ौमी सलामती और ख़ारजा पालिसी कमीशन के सरबराह अलाउद्दीन बरूजरदी की सरबराही में पर्लिमानी प्रतिनिधि मण्डल के एक जलसे में कहा है कि बेगुनाह लोगों का क़त्ले आम दुश्मन की नाकामी की दलील है। हिज़्बुल्लाह के जनरल सिक्रेटरी ने इस मुलाक़ात में लिब्नान में इस्लामी जम्हूरिया ईरान के सेफ़ारतखाने के क़रीब हालिया दिनों हुए बम धमाकों जिनमें ग्यारह अफ़राद शहीद हो गये थे की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि बेगुनाह बच्चों, औरतों और रास्ता चलने वाले लोगों का क़त्ले आम करना मज़ाहेमत के दुश्मनों की नाकामी की अलामत है। अलाउद्दीन बरूजर्दी ने इस मुलाक़ात में लिब्नान पर हालिया इसराईली हमले की मज़ाहेमत करते हुए खुद मुख़्तार और लिब्नान की इलाक़ाई सियासत की अहमियत पर ज़ोर दिया। ईरान की क़ौमी सलामती और ख़ारजा पालिसी कमीशन के सरबराह ने तकफ़ीरी दहशतगर्द टोलियों को हासिल सहयूनी बराह रास्त हिमायत की तरफ़ इशारा करते हुए क़ुद्स की ग़ासिब हुकूमत इसराईल को इलाक़े में बदअम्नी का अहम हिस्सा क़रार दिया। बरोजर्दी ने ज़ोर देते हुए कहा कि इस्लामी जम्हूरिया ईरान मज़ाहमत की हिमायत करने से लम्हा भर के लिए शक व तरदीद और सुस्ती से काम नहीं लेगा और दहशतगर्दाना इक़्दामात और बैरूनी साज़िशों का मुक़ाबिला, राहे अदालत म मज़ाहेमत पर चलने वालों के अज़ाएम को मुस्तहकम बनाए बग़ैर मुम्किन नहीं होगा। हिज़्बुल्लाह के ख़बर रसां ज़राए ने पहले से ही एक बयान जारी करके इस बात की इत्तेला दे दी थी कि इस मुलाक़ात में दोनों ओहदेदार इलाक़े मुख्यतः लिब्नान समस्याओं पर विचार विमर्श करेंगे।

बैतुल मुक़द्दस की मसाजिद में लाउडस्पीकर पर अज़ान देने पर पाबन्दी का इसराईली मन्सूबा

इसराईली ज़राए इब्लाग़ ने इन्केशाफ़ किया है कि सहयूनी हुकूमत ने मक़बूज़ा बैतुलमुक़द्दस की तमाम मस्जिदों मस्जिदे अक़्सा तक में लाउडस्पीकर पर अज़ान देने पर पाबन्दी का मन्सूबा तैयार किया है ये ख़बर मन्ज़रे आम पर आने के बाद बैतुल मुक़द्दस में फ़िलिस्तीनी हलक़ों में गहरी तशवीश और ग़म व गुस्से की लहर दौड़ गयी है। इसराईली साप्ताहिक समाचार पत्र "यरो शलम" की रिपोर्ट के मुताबिक़ बैतुल मुक़द्दस की मस्जिदों में दिन के पांच औक़ात में गूंजने वाली अज़ान की आवाज़ों से यहूदी आबादकार मुतास्सिर हो रहे हैं। यहूदियों की शिकायत पर हुकूमत ने अज़ानों की आवाज़ें महदूद करने के लिए लाउडस्पीकर पर पाबन्दी पर ग़ौर शुरू किया है।

●●●

; gwnhjchdlhd;kr esabLtsgkil Uh; gfn; ksdkeflt nsvDlkij /kkok

इसराईली पुलिस की मौजूदगी और तहफ़्फ़ुज़ में क़रीबन अस्सी इन्तेहा पसन्द यहूदी आबादकारों ने यहूदी रबी की क़यादत में मस्जिदे अक़्सा पर धावा बोल दिया है और इसकी बेहुरमती की है। मस्जिदे अक़्सा के एक मुहाफ़िज़ नस्र क़ौस ने तरक्की की अना तूलिया न्यूज़ ऐजेन्सी को बताया है कि "यहूदी आबादकार मग़रिबी दरवाज़े से कैम्पस में दाख़िल हुए थे और फिर उन्होंने मस्जिद का चक्कर लगाया और बाबुर्रहमत और बाबुल क़तनैन से भी गुज़रे।"

नस्र ने बताया कि रबी यहूद अगलिक ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ नस्ल परस्ताना नारेबाज़ी की है। ये इन्तेहा पसन्द रबी टेम्पल माउण्ट हेरीच फ़ाउण्डेशन का भी सरबराह है। उसने इसराईली पुलिस से कहा कि इन बलुआइयों को दूर रखा जाए और उसके बाद यहूदी आबादकारों और मस्जिदे अक़्सा के अहाते में इबादत के लिए मौजूद मुसलमानों के दरमियान तल्ख़ कलामी शुरू हो गयी।

अक़्सा फ़ाउण्डेशन बराए वक़्फ़ और सक़ाफ़त ने यहूदी इन्तेहा पसन्दों की इस दरअन्दाज़ी की मज़म्मत की है और कहा है कि इसराईली पुलिस मुस्लिम तलबा के ख़िलाफ़ तो मस्जिदुल अक़्सा में दाखिले के हवाले से सख़्त इक़्दामात कर रही है लेकिन उसने यहूदी आबादकारों को मस्जिद में दाखिले की खुली छूट दे रखी है। इसराईली पुलिस ने जुमा को मस्जिदुल अक़्सा में नमाज़े जुमा अदा करने के लिए आने वाले मुसलमानों को महदूद रसाई दी थी। इसराईली पुलिस ने यह इक़्दाम अक़्सा कम्पाउण्ड में नमाज़े जुमा के लिए आने वाले फ़िलिस्तीनियों के साथ झड़प के बाद किया था।

स्मार्ट मैगनेटिक कार्ड बैतुल मुक़द्दस से फ़िलिस्तीनियों को निकालने की सहयूनी साज़िश

इसराईल ने फ़िलिस्तीन के तारीखी शहर बैतुल मुक़द्दस को उसके असली बाशिन्दों से महरूम करने के लिए हर हरबा इस्तेमाल करके एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रखा है। इस सिलसिले में दीगर हथकण्डों और ताक़तों के इस्तेमाल के साथ स्मार्ट शनाख़्ती कार्ड और ''बायोलाजिकल मैग्नेटिक कार्ड के नाम से एक नई साज़िश सामने आयी है। इन्सानी हुकूक़ की तन्ज़ीमों और क़ानूनी हलक़ों की जानिब से इस घिनाउनी साज़िश पर सख़्त इन्तेबाह किया गया है।

इन्सानी हुकूक़ की तन्ज़ीमों का कहना है कि इसराईल ने एक सोची समझी साज़िश के तहत स्मार्ट मैगनेटिक कार्ड की आड़ में बैतुल मुक़द्दस के बाशिन्दों को शहरी, समाजी सियासी और बुनियादी हुकूक़ से महरूम करने की मुहिम शुरू कर रखी है। बैतुल मुक़द्दस में फ़िलिस्तीनियों के समाजी और इक़्तेसादी हुकूक़ के सरगरम इदारे के सरबराह ''ज़ियादुल महूरी'' ने मरकज़े इत्तेलाआते फ़िलिस्तीन से गुफ़्तुगू करते हुए कहा कि मैग्नेटिक हयातयाती कार्ड के अजरा का मक़सद बैतुल मुक़द्दस के एक लाख पचास हज़ार से ज़्यादा बाशिन्दों को अलक़ुद्स से महरूम करना और उन्हें फ़िलिस्तीन के दूसरे इलाक़ों की तरफ़ हिजरत पर मजबूर करना है।

उन्होंने कहा कि सहयूनी हुकूमत ने बैतुलमुक़द्दस के तरक़्क़ियाती प्रोग्राम बराए 2020 ई0 और 2030 ई0 के दौरान सहयूनी हुकूमत बैतुलमुक़द्दस में फ़िलिस्तीनी शहरियों की तादाद 35ः से कम करके 12ः तक लाना चाहती है। एक सवाल के जवाब में फ़िलिस्तीनी दानिश्वर का कहना था कि इसराईली हुकूमत ने एक जानिब ये स्मार्ट मैग्नेटिक कार्ड तमाम फ़िलिस्तीनी शहरियों के लिए लाज़मी क़रार दिये हैं और दूसरी जानिब सहयूनी वज़ारत बैतुल मुक़द्दस के शहरियों को अपने हाँ रसाई का सिरे से मौक़ा ही फ़राहम नहीं करती जिसके नतीजे में फ़िलिस्तीनियों का मुस्तक़बिल ख़तरे में पड़ चुका है। जिन शहरियों ने सहयूनी हुकूमत की तरफ़ से जारी करदा स्मार्ट कार्ड हासिल भी किये हैं। अब वो अपनी मुक़र्ररा मुद्दत पूरी कर चुके हैं और सहयूनी हुकूमत उनकी तजदीद नहीं कर रही है।

फिलिस्तीनी समाजी रहनुमा अहमूरी ने कहा कि जिन शहरियों के पास सहयूनी हुकूमत के मन्ज़ूर करदा स्मार्ट कार्ड नहीं उन्हें मिल्कियत के हक़ से महरूम कर दिया जाता है। ऐसे शहरी दीवार फ़ासिल के अन्दरूनी इलाक़ों में कोई जाएदाद ख़रीद सकते हैं और न ही किराए पर ले सकते हैं। इन्हें टैक्स अदा करने की इजाज़त भी नहीं और न ही कार्ड के बग़ैर रहने वाले शहरी बिजली, गैस और पानी हासिल कर सकते हैं हत्ता कि उनके बच्चों को सात साल तक बर्थ सर्टिफिकेट भी नहीं दिये जा सकते।

ग़रब उरदन सहयूनी हमले का निशाना, 5 फ़िलिस्तीनी ज़ख़्मी

ग़ासिब सहयूनी हुकूमत के फ़ौजियों ने ग़ज़ा और ग़रब उरदन के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों को अपनी जारहियत का निशाना बना रखा है। फ़िलिस्तीनी ज़राए के मुताबिक़ ग़ासिब सहयूनी हुकूमत के फ़ौजियों ने ग़रब उरदन में वाक़ेअलख़लील के उत्तर में एक इलाक़े को अपनी जारहियत का निशाना बनाया जहां सहयूनी फ़ौजियों की फ़ाएरिंग में कम से कम 5 फ़िलिस्तीनी मुसलमान ज़ख़्मी हो गये। इस वाक़ेए में ग़ासिब सहयूनी हुकूमत के फ़ौजियों और फ़िलिस्तीनी मुसलमानों के दरमियान झड़पें भी हुईं। ज़राए के मुताबिक़ सहयूनी फ़ौजियों ने फ़िलिस्तीनी मुसलमानों के ख़िलाफ़ आंसू गैस का भी इस्तेमाल किया। सहयूनी फ़ौजियों की ये बरबरीयत, ऐसी हालत में जारी है कि सहयूनी फ़ौजियों ने लगातार ग़ज़ा के मुख़्तलिफ़ इलाकों को अपनी जारहियत का निशाना बनाया जिसमें कम से कम तीन फ़िलिस्तीनी मुसलमान शहीद हो गये।

अमरीका नवाज़ अरब ममालिक की ख़ामोशी के साए में फ़िलिस्तीनियों पर इसराईली भयानक जराएम और अत्यााारों का सिलसिला जारी है इसराईल के ताज़ा तरीन फ़िज़ाई हमलों के जवाब में फ़िलिस्तीनियों ने भी 4 राकेट इसराईल की तरफ़ फ़ायर किये हैं।

महर ख़बररसां एजेन्सी ने फ़िलिस्तीनी यौम के हवाले से नक़्ल किया है कि अमरीका नवाज़ अरब ममालिक की ख़ामोशी के साए में फ़िलिस्तीनियों पर इसराईली भयानक जराएम और मज़ालिम का सिलसिला जारी है इसराईल के ताज़ा तरीन फ़िज़ाई हमलों के जवाब में फ़िलिस्तीनियों ने भी 4 राकेट इसराईल की तरफ़ फायर किए हैं। इसराईली जंगजू जहाज़ों ने ग़ज़ा के 29 एहदाफ़ पर शदीद बमबारी की जबकि फ़िलिस्तीनी जिहादी तनज़ीमियों ने भी जवाब में राकेट फायर किये हैं जिनमें एक इसराईली ज़ख्मी हो गया है। इधर इसराईली हुक्काम ने ग़ज़ा के मुख़्तलिफ इलाकों पर मज़ीद बमबारी की धमकी दी है और इसराईल ने अबूसालिम गुज़रगाह को भी आरज़ी तौर पर बन्द कर दिया है।